कैम्पस कनेक्ट

राम लाल आनंद महाविद्यालय का मासिक ई-न्यूज़लेटर

हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग का प्रकाशन | नई दिल्ली, दिसम्बर 2023 | वर्ष 1, अंक 4, पृष्ठ 4

साइबर हमलों से महिलाएं खुद को बचाएं

वूमेन वेलफेयर कमेटी की 'महिलाओं के लिए साइबर सुरक्षा और जागरुकता' विषयक कार्यशाला

'महिलाओं के लिए साइबर सुरक्षा और जागरुकता' विषय पर डॉ सुरभि पांडेय ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया

दिव्या

नई दिल्ली। किस तरह कुछ लोग साइबर अपराध के जरिए किसी की निजी जानकारी प्राप्त करते हैं और उसका गलत फायदा उठाते हैं और ऑनलाइन बैंक खातों से पैसे चुराने जैसा गैर कानूनी काम करते हैं। किस प्रकार महिलाएं साइबर हमलों से खुद को बचा सकती हैं। इन विषयों पर डॉ सुरभि पांडेय ने अपना वक्तव्य पेश किया।

राम लाल आनंद महाविद्यालय की वूमेन वेलफेयर एडवाइजरी कमेटी ने 2 नवंबर 2023 को महिलाओं के लिए साइबर सुरक्षा और जागरूकता विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया। इसमें मुख्य वक्ता के रूप में इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन की डॉ सुरभि पांडेय ने साइबर अपराधों के बारे में बताया। उन्होंने पुलिस सहायता के लिए आपातकालीन नंबर 112 और साइबर वित्तीय धोखाधड़ी की रिपोर्ट करने के लिए राष्ट्रीय हेल्पलाइन नंबर 1930 का उल्लेख किया। कार्यशाला में महाविद्यालय की अनेक शिक्षिकाएं उपस्थित रहीं। इनमें मुख्य रूप से समिति संयोजिका डॉ. सुधा चौधरी, सह संयोजक डॉ. सीमा जोशी, प्रो. नीलम ऋषिकल्प, डॉ. निधि चंद्रा, डॉ. निधि वर्मा आदि शामिल थीं।

आरएलए की सिमरन का जापान में शानदार प्रदर्शन

निशा मिश्रा

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय की छात्रा सिमरन अरोड़ा ने जापान साइंस एंड टेक्नोलॉजी एजेंसी के सकुरा साइंस एक्सचेंज प्रोग्राम 2023 में अपनी मेहनत को साकार किया। सकुरा साइंस एक्सचेंज प्रोग्राम ने 2014 से युवा छात्रों को जापान में शॉर्ट टर्म सोजर्न के लिए आमंत्रित करना शुरू किया है। इस साल जेएसटी ने दिल्ली विश्वविद्यालय के पांच उम्मीदवारों को सकुरा साइंस यूनिवर्सिटी प्रोग्राम 2023 के तहत आमंत्रित किया था, जो अनुसंधान और जापान के साथ सांस्कृतिक आदान–प्रदान के प्रदर्शन के लिए चयनित हुए।

अपनी रुचि को प्रदर्शित करने के लिए सिमरन ने चयन प्रक्रिया में शामिल होने का निर्णय लिया। उनकी जापान के प्रति रुचि को देखते हुए जेएसटी ने उनका दिल्ली विवि की ओर से चयन किया। सिमरन ने 24 सितंबर से 30 सितंबर 2023 तक जापान में अपना समय बिताया। जहां सिमरन ने टोक्यो के मंदिरों से लेकर विज्ञान म्यूजियम तक कई स्थानों का दौरा किया, जिसमें कई चीजें देखने का उन्हें मौका मिला। समापन समारोह में जेएसटी मुख्यालय में हुए उनके स्वागत में भारतीय दूतावास के प्रमुख ने उनकी उपलब्धि की सराहना की और उन्हें भारत के लिए होनहार बताया। साथ ही आगे भी ऐसे प्रयास करने पर बल दिया।

फोटोग्राफी कार्यशाला

दीपक

नई दिल्ली। मुक्तेश्वर सतखोल के सोनापानी गांव में द एस्केप ने एक फोटोग्राफी कार्यशाला का आयोजन किया। 28 अक्टूबर से 31 अक्टूबर तक चली कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रुप में फोटोग्राफर सौरभ श्रीवास्तव और हर्षित रौतेला उपस्थित हुए। उपस्थित लोगों को फोटोग्राफी से संबंधित उपयोगी चीजें बताई गईं। किस तरह फोटोग्राफी की जानी चाहिए, आकर्षक और प्रभावी फोटो कैसे खींचनी चाहिए सहित इस विधा से जुड़ी कई जानकारी दी गईं।

इस दौरान प्रतिभागियों ने दोनों विशेषज्ञों से सवाल भी किए। वर्कशॉप में फोटोग्राफी के विभिन्न आयामों पर चर्चा भी की गई। एक फोटोग्राफी वॉक भी रखी गई। अंत में प्रतिभागियों ने पिकनिक व बोर्नफायर का लुत्फ उठाया।

लैंगिक असमानता में बदलाव होना चाहिए

श्वेता

नई दिल्ली। लैंगिक असमानता समाज का ऐसा अभिशाप है, जिससे महिला, पुरुष व अन्य सभी लिंग पीड़ित हैं। इसे समाप्त करने के लिए अलग–अलग स्तरों पर कार्य हो रहे हैं। इसी कड़ी में राम लाल आनंद महाविद्यालय की अस्मि समिति ने भी पहल की। यह समिति लैंगिक संवेदनशीलता पर कार्य करती है। अस्मि यानी मैं, जिसमें एक व्यक्ति का अस्तित्व समाया हुआ है।

26 अक्टूबर को अस्मि समिति ने अभिविन्यास कार्यक्रम महाविद्यालय के सेमिनार कक्ष में आयोजित किया। इसमें किस तरह धीरे–धीरे लैंगिक असमानता समाज के लिए बड़ी चुनौती बनती जा रही है, हाल ही में सुप्रीम कोर्ट ने समलैंगिक विवाह के प्रस्ताव पर रोक लगा दी है। ऐसे ही संवेदनशील विषयों पर कार्यक्रम में चर्चा की गई।

समिति संयोजिका प्रो. श्रुति आनंद विद्यार्थियों से कहती हैं कि समाज में लैंगिक असमानता जैसी कुरीतियों को मिटाना जरूरी है। इससे पहले समिति सदस्य उमांशी और प्रभाकर ने अस्मि समिति का संक्षिप्त परिचय दिया। साथ ही अस्मि के सफर को वीडियो के माध्यम से दर्शाया गया और एक छोटे प्रश्नावली सत्र के साथ कार्यक्रम की समाप्ति की गई। समिति की सह संयोजिका डॉ. दीपशिखा कुमारी, डॉ. शची मीणा और डॉ. अरुण मौजूद रहे।

आइडिया टू इनोवेशन

अंशिका

नई दिल्ली। स्टैंड अप इंडिया स्टार्टअप जैसी योजना एक आम व्यक्ति की सोच को नई दिशा देने में बड़ी भूमिका निभाती है। यह बात राम लाल आनंद महाविद्यालय में ई सेल की ओर से 'ब्लूप्रिंट फॉर ब्रिलियंस : एंटरप्रेन्योरियल जर्नी फ्रॉम आइडिया टू इनोवेशन' पर अयोजित सेशन में मुख्य वक्ता शिवानी सिंह ने कही। शिवानी ने कहा कि कोई भी नौकरी, व्यापार या स्टार्टअप तीन चीजों के बिना परफेक्ट नहीं है–क्लियर फोकस, एकाग्रता और लक्ष्य। इससे पहले शिवानी सिंह को ई सेल की संयोजक डॉ. सीमा गुप्ता ने जीवंत पौधा देकर सम्मानित किया। सेशन के दौरान प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता, सह संयोजक सिद्धार्थ गुप्ता समेत कई शिक्षक और विद्यार्थी उपस्थित रहे।

कैसे करें स्टार्टअप निर्माण

मार्ग समिति के वेंचर व्यू कार्यक्रम में प्रतिभागियों ने ली हिस्सेदारी।

दिव्या

नई दिल्ली। एक अच्छा उद्योगपति वह व्यक्ति है जो समाज में चल रही परेशानियों को समझता है। उनको ध्यान में रखकर किसी उद्योग का निर्माण करता है। यह बात राम लाल आनंद महाविद्यालय की मार्ग समिति के कार्यक्रम वेंचर व्यू में मुख्य वक्ता उद्योगपति तुषार कंसल ने कही।

सेमिनार कक्ष में 6 नवंबर को हुए कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों को उद्यमशीलता से जोड़ना था। बच्चों को एक थीम दी गई, जिस पर उन्हें स्टार्टअप निर्माण और प्रचार करना था। इसमें विद्यार्थियों को समझाने का प्रयास किया गया कि प्रचार प्रसार किसी उद्योग के लिए कितना जरूरी है। आयोजन में कार्यक्रम प्रभारी डॉ. सिद्धार्थ गुप्ता, संयोजिका रियांका जैन और सह संयोजिका सृजना सिंह मौजूद रही।

अगोरा में छाए तर्क–वितर्क

सोनिका

नई दिल्ली। वाद–विवाद एक ऐसी कला है, जिसमें विद्यार्थी किसी भी मुद्दे पर अपने विचार रख सकते हैं। इस विधा में कोई पाबंदी नहीं होती। महाविद्यालय की अंग्रेजी वाद–विवाद समिति आवाज ने इसी कड़ी में दो दिवसीय कार्यक्रम अगोरा आयोजित किया। कार्यक्रम 3 से 4 नवंबर को महाविद्यालय परिसर और सेमिनार कक्ष में हुआ, जिसमें एक्स्टेम्पोर, टर्नकोर्ट, लिंकन डगलस और ऑक्सफोर्ड नामक प्रतियोगिताएं आयोजित हुईं। कार्यक्रम का नाम ग्रीक भाषा के शब्द अगोरा से लिया गया, जिसका अर्थ होता है सार्वजनिक स्थल पर अपनी बात खुले मन से रखना। कार्यक्रम में डीयू के 20 महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। विद्यार्थियों ने देश–विदेश से जुड़े कई महत्वपूर्ण विषयों पर अपने विचार प्रस्तुत किए। अंत में आवाज समिति के संयोजक डॉ. ताहा यासीन, डॉ. सृजना सिंह और महाविद्यालय के उप प्राचार्य प्रो. सुभाष चन्द्र डबास ने विजेताओं को सम्मानित किया।

बच्चों ने सीखा, पत्रकारिता में डाटा विजुअलाइजेशन

अनुराग

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय में 11 अक्टूबर को हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग ने पर्यावरण समाचार में डाटा विजुअलाइजेशन की वर्कशॉप कंप्यूटर लैब में आयोजित की। कार्यशाला संयोजक विभाग की सहायक प्राध्यापिका सुश्री श्वेता आर्य थीं। 'डाउन टू अर्थ' पत्रिका के सहायक संपादक राजित सेनगुप्ता ने विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया। इससे पहले विभाग के संयोजक प्रो. राकेश कुमार ने मुख्य वक्ता सहित विद्यार्थियों का स्वागत किया। मुख्य वक्ता ने विद्यार्थियों को फास्ट फैशन और उससे होने वाले नुकसानों से अवगत करवाया। मीडिया की पर्यावरण पत्रकारिता में भूमिका का जिक्र किया व विकसित देशों के मीडिया एकाधिकार पर भी चर्चा की। कंप्यूटर में विद्यार्थियों से डाटा विजुअलाइजेशन कराया गया। इस मौके पर विभाग के शिक्षक डॉ. अटल तिवारी, डॉ निशा सिंह मौजूद रहे।

पर्यावरण पत्रकारिता के बारे में विद्यार्थियों को जानकारी देते हुए पत्रकार राजित सेनगुप्ता।

न्यूज लेटर रहा लाभदायक

मीनाक्षी पंत

राम लाल आनंद महाविद्यालय के हिंदी पत्रकारिता एवं जन. संचार विभाग में कुछ महीनों पहले ही न्यूज लेटर निर्माण का विचार सामने आया। इस विषय पर चर्चा की गई और अंत में इस पर मुहर लगाते हुए कैंपस कनेक्ट न्यूज लेटर नामकरण भी कर दिया गया। मैंने जब से कैंपस कनेक्ट न्यूज लेटर के बारे में सुना। मुझे भी इसमें काम करने की उत्सुकता रही। मेरे हिस्से दिसंबर अंक का न्यूज लेटर आया, जिसमें मुझे एक बेहद अहम भूमिका अदा करनी थी। संपादक की भूमिका।

यह जिम्मेदारी भरा कार्य मेरे लिए जितना लाभकारी हुआ, उतना ही चुनौतीपूर्ण रहा। इस दौरान मैंने कई नई चीजें सीखीं। क्वार्क एक्सप्रेस पर काम करने का मौका मिला। हिंदी टाइपिंग की अहमियत जान पाई। आकर्षक लेआउट खींचना सीखा। चित्रों का महत्व जाना। हर एक खबर को बारीकी से जांचना सीखा। सभी खबरों में से महत्वपूर्ण खबरों का चयन करना सीखा। टीम के साथ मिलकर काम करना सीखा। साथ ही साथ न्यूज लेटर में खबरों को व्यवस्थित ढंग से लगाना भी सीखा। मेरे लिए यह अनुभव बहुत उपयोगी साबित हुआ। भविष्य में मुझे इससे काफी लाभ मिलेगा। कैंपस कनेक्ट न्यूज लेटर हिंदी पत्रकारिता एवं जन. संचार विभाग का एक सराहनीय कदम है। इसकी सहायता से केवल पत्रकारिता के विद्यार्थियों को ही नहीं बल्कि अन्य विभाग के विद्यार्थियों को भी पत्रकारिता के कई आयाम जानने व सीखने को मिलेंगे। इससे विद्यार्थियों का मनोबल भी बढ़ेगा। मुझे उम्मीद ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि कैंपस कनेक्ट न्यूज लेटर में काम कर चुके व आगे आने वाले समय में काम करने वाले विद्यार्थी इससे बहुत कुछ सीखेंगे और सही दिशा में काम करेंगे।

आरएलए से पढ़े डॉ. अश्विनी को भटनागर पुरस्कार

श्रुति मिश्रा

नई दिल्ली। भारत की मिट्टी से कई ऐसे अमूल्य रत्न उभरे हैं, जिन्होंने भारत का नाम दुनिया भर में रोशन किया है। ऐसे ही एक व्यक्ति हैं डॉ. अश्विनी कुमार। यह सूक्ष्मजीव प्रौद्योगिकी संस्थान (इमटेक) के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक हैं। इन्होंने अपनी स्नातक डिग्री दिल्ली विश्वविद्यालय के राम लाल आनंद महाविद्यालय से 1995 में प्राप्त की थी। 2010 में यह वरिष्ठ वैज्ञानिक के रूप में इमटेक से जुड़े। अश्विनी कुमार को 26 सितंबर 2023 को प्रगति मैदान में हुए जी 20 के दौरान भारत मंडपम में शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार इन्हें भारत के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने दिया। इन्हें यह पुरस्कार टीबी की बीमारी के बारे में नई खोज के लिए दिया गया है।

टीबी का अर्थ है ट्यूबर क्यूलोसिस यानी क्षय रोग। यह रोग कीटाणुओं के कारण होता है और यह एक ऐसी बीमारी है जो हवा के माध्यम से दूसरों तक पहुंचती है। इसके कीटाणु शरीर में जाने के कुछ समय तक तो जागृत अवस्था में होते हैं पर कुछ समय बाद वह निष्क्रिय हो जाते हैं। इस निष्क्रिय अवस्था में यह स्थिति ज्यादा गंभीर हो जाती है क्योंकि यह कीटाणु दवाइयों के प्रति कोई प्रतिक्रिया नहीं करते हैं। साथ ही इसकी दवाइयां इतनी नुकसानदेह होती हैं कि यह कई मामलों में जानलेवा भी साबित हो सकती हैं।

- आरएलए से 1995 में हासिल की थी शिक्षा
- टीबी में नई खोज के लिए मिला पुरस्कार

अब सवाल उठता है कि अगर यह दवाइयां इतनी खतरनाक हैं तो यह मरीज को क्यों दी जाती हैं? इसका जवाब है कि टीबी इतनी घातक बीमारी है कि और किसी दवाई से यह ठीक नहीं हो सकती। इतनी तेज दवाइयों से भी इसको ठीक होने में 6 महीने का समय लगता है। तब भी यह पूरी तरह से आश्वस्त नहीं किया जा सकता कि यह बीमारी पूर्ण रूप से ठीक हो चुकी है। टीबी के विषय में अनुसंधान के लिए अश्विनी कुमार को एक टीबी रोगी से प्रेरणा मिली।

शिक्षा के दौरान उनकी मुलाकात एक क्षय रोगी महिला से हुई, जिस पर उन्हें रिसर्च करनी थी। जब एक समय के बाद उन्होंने देखा कि उनका शरीर प्रतिक्रिया नहीं कर रहा है तब उनके सीनियर ने बताया कि मरीज की मृत्यु हो चुकी है। इसके बाद उन्हें महसूस हुआ कि टीबी कितनी गंभीर बीमारी है। इस घटना ने उन्हें प्रेरणा दी कि वह टीबी के मरीजों की कुछ सहायता कर पाएं। टीबी के विषय में इस खोज के लिए ही उन्हें इस वर्ष यह पुरस्कार दिया गया। शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार उन युवा भारतीय वैज्ञानिकों को दिया जाता है जो भारत में विज्ञान और प्रौद्योगिकी में उत्कृष्ट कार्य करते हैं।

इस पुरस्कार का नाम सीएसआईआर के संस्थापक और निदेशक डॉ. शांति स्वरूप भटनागर के नाम पर रखा गया है। इसमें पांच लाख रुपए की राशि रखी गई है। यह जैविक विज्ञान, रासायनिक विज्ञान, पृथ्वी, वायुमंडल, महासागर और ग्रह विज्ञान, इंजीनियरिंग विज्ञान, गणितीय विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान और भौतिक विज्ञान विषयों के लिए प्रदान किया जाता है।

डॉ. अश्विनी कुमार को यह पुरस्कार जैविक विज्ञान में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए मिला है। वर्तमान समय में भी डॉ. अश्विनी कुमार और उनकी लैब इमटेक टीबी के विषय में जांच कर रही है, जिससे छह महीने की दवाइयों की प्रक्रिया सामान्य बीमारियों की दवाइयों की प्रक्रिया के लगभग बराबर हो जाएगी। इसमें शायद मरीजों को खतरनाक दवाइयों का अधिक सेवन न करना पड़े।

'स्वस्थ जीवन के लिए लाइफ स्टाइल को थोड़ा ठीक कर लें'

डॉ. लीना डढवाल, साक्षात्कारदाता

राजीव गांधी कैंसर संस्थान एवं अनुसंधान केंद्र की वरिष्ठ ऑन्कोलॉजी सलाहकार डॉ. लीना डढवाल से राम लाल आनंद महाविद्यालय के सामुदायिक रेडियो तरंग 90.0 एफएम के लिए साक्षात्कार लिया गया, जिसमें उनसे महिलाओं में होने वाले यूटरस कैंसर से जुड़े अनेक सवाल किए गए। उसी साक्षात्कार के कुछ अंश 'कैम्पस कनेक्ट' के पाठकों के लिए...

शृंगारिका, साक्षात्कारकर्ता

यूटरस कैंसर क्या होता है?

शरीर में नॉर्मल ग्रोथ कंट्रोल से बाहर होकर जब ज्यादा होने लगती है तब उसे कैंसर कहा जाता हैं। यूटरस यानी गर्भाशय। इसके दो हिस्से होते हैं। एक ऊपरी, जो बॉडी होता है। इसे यूटरिन कैंसर बोलते हैं और नीचे की ओर उसका मुंह होता है। जिसे सर्विक्स बोला जाता है। वह सर्वाइकल कैंसर होता है। यूटरिन बॉडी की बात करें तो एंडोमेट्रियल कैंसर यूटरिन बॉडी का कैंसर होता है।

कैंसर के विभिन्न प्रकारों में गर्भाशय कैंसर कितना प्रमुख है?

एंडोमेट्रियल कैंसर यूटरिन बॉडी का कैंसर होता है। भारत में पहले नंबर पर ब्रेस्ट कैंसर अधिकतर पाया जाता है। दूसरे नंबर पर सर्वाइकल कैंसर आता है। मतलब यूटरस के मुंह का कैंसर और एंडोमेट्रियल कैंसर की बात करें तो वह पांचवे–छठे नंबर पर आता है। यह बहुत खतरनाक होता है। इसमें मरीज का समय पर सही उपचार न किया जाए तो जान भी जा सकती है।

एंडोमेट्रियल कैंसर के क्या–क्या लक्षण होते हैं?

पीरियड्स मुख्य रूप से एंडोमेट्रियल कांस्टेंट माना जाता है। महिलाओं को पीरियड्स 11–12 साल से लेकर लगभग 52 साल तक ही आते हैं। इसके बाद बंद हो जाते हैं, लेकिन अगर उसके बाद भी रक्त स्राव होता है तो वह ज्यादातर एंडोमेट्रियल कैंसर की वजह से ही होता है। इसके साथ ही अगर हर महीने नियमित समय में पीरियड्स नहीं आते तो ऐसे में चेकअप करवाना चाहिए। एक उम्र के बाद पीरियड्स बंद हो जाते हैं। अगर उसके बाद एक बूंद भी खून की आती है तो यह सामान्य नहीं होता। तुरंत हमें चेकअप के लिए जाना चाहिए।

हमारी डाइट और लाइफ स्टाइल का इस पर कितना असर पड़ता है?

हम बहुत ज्यादा फैट वाला खाना खाते हैं या एक ही जगह पर बैठे हुए काम करते हैं। जिसकी वजह से हार्मोन्स असंतुलित होते हैं और बॉडी सेल गड़बड़ होने लगते हैं। इम्यूनिटी सिस्टम मजबूत होता है तो सेल रिकवर हो जाते हैं। लेकिन आजकल अनहेल्दी डाइट होने के कारण हमारा इम्यूनिटी सिस्टम भी मजबूत नहीं होता। सेल कमजोर पड़ जाते है और आसानी से रिकवर नहीं हो पाते। अपनी डाइट में हेल्दी खाना जरूर शामिल करना चाहिए। इससे काफी हद तक हमारे स्वास्थ्य को बाहरी व अंदरूनी बीमारियों से लड़ने की ताकत मिलती है। इसलिए हमें प्रोटेक्टिव दवाई के रूप में हेल्दी खाने का सेवन करना चाहिए। इसके साथ ही सिगरेट पीना, शराब पीना, ज्यादा नॉनवेज खाना, ज्यादा सेचुरेटेड फैट का खाना लेना और 24 घंटे तनाव लेना भी खतरनाक होता है। इसके अलावा हम पूरी नींद भी नहीं लेते। नियमित घंटे की नींद लेना मानव शरीर के लिए जरूरी होता है। हमारे नींद का पैटर्न ठीक नहीं होता है, जिसकी वजह से हार्मोंस में बहुत असर पड़ता है और हार्मोंस के असंतुलन से शरीर में अनेकों बीमारियां जन्म लेती हैं।

कौन सी उम्र की महिलाओं में एंडोमेट्रियल कैंसर ज्यादा देखने को मिलता है?

एंडोमेट्रियल कैंसर मुख्य रूप से उम्रदराज महिलाओं में पाया जाता है। यंग लेडीज को भी एंडोमेट्रियल कैंसर होता है, लेकिन ज्यादातर वृद्ध अवस्था में यह शरीर को अटैक करता है। क्योंकि समय के साथ–साथ शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होती चली जाती है। अगर हमें स्टेज एक में ही कैंसर के बारे में पता लग गया तो मरीज जल्दी ठीक हो सकता है। लेकिन स्टेज चार में सब कुछ शरीर में फैल जाता है और मरीज को बचा पाना बहुत मुश्किल हो जाता है। शुरुआत में लोग शर्म की वजह से बीमारी के बारे में नहीं बताते। धीरे–धीरे यह दूसरी और तीसरी स्टेज तक पहुंच जाता है। आगे चलकर चौथी स्टेज में यह विकराल रूप ले लेता है।

यूटरस कैंसर का उपचार कैसे किया जा सकता है?

उपचार की बात करें तो कीमोथेरेपी सर्जरी से यह पूरी तरह ठीक हो जाता है। उसके बाद थोड़ा रेडियोथेरेपी देने की जरूरत पड़ती है। लेकिन जब p53 होता है या ज्यादा होता है। उस समय पेशेंट को कीमोथेरेपी लेने की ज्यादा जरूरत पड़ती है। अगर ch3 s4 में होते हैं तो पहले कीमोथेरेपी देने का काम किया जाता है। उसके बाद हम सर्जरी करते हैं और फिर रेडियोथेरेपी ट्रीटमेंट दिया जाता है। आजकल इम्यूनोथेरेपी भी प्रचलन में है जो हमें इस कैंसर से बचाने की कोशिश करता है।

तरंग

TARANG 90. 0 FM

आपके पास आए सबसे खतरनाक केस के बारे में बताइए।

देखिए, हमारे तरीके हैं म्यूटेशन। जब किसी जीन के डीएनए में कोई स्थाई परिवर्तन होता है तो उसे उत्परिवर्तन यानी म्यूटेशन कहा जाता है। यह कोशिकाओं के विभाजन के समय किसी दोष के कारण पैदा हो सकता है या किसी प्रकार के रासायनिक तत्व या वायरस के कारण भी हो सकता है। म्यूटेशन के अंतर्गत मानव शरीर में कुछ न कुछ बदलाव होता है जिसकी वजह से हमें पता चलता है कि पेशेंट को कुछ परेशानी हो गई है। आम तौर पर म्यूटेशन बहुत अच्छा साबित होता है। कोई–कोई खराब होता है, जैसे अगर म्यूटेशन होता है तो उससे पेशेंट को वापस बीमारी आने का खतरा बहुत कम या कहें तो नहीं के बराबर हो जाता है, लेकिन एमआर का प्रोफेशन होता है या डिफिशिएंट होता है तो उसके मुताबिक उसके ऊपर प्रोग्नोसिस पर असर होता है। p53 अगर एक्सप्रेशन गड़बड़ होती है, म्यूटेशन होता है तो वह बिल्कुल ही खराब होता है। इसमें कीमोथेरेपी विशेष वन पर भी कीमोथेरेपी, रेडियोथेरेपी सब कुछ देना पड़ता है। अगर मैं अब तक के अपने अनुभव में सबसे जटिल केस के बारे में बात करूं तो तकरीबन सात साल पहले एक पेशेंट ऐसे आए थे जिनका स्टेज एक शेड्यूल हो गया था। हम इस बात से संतुष्ट थे कि हमें कोई बड़ा ट्रीटमेंट करने की जरूरत नहीं है। लेकिन एक ही साल के बाद बीमारी पूरी तरह फैल गई। वह स्थिति हमारे लिए बहुत जटिल थी, क्योंकि हमने सोचा कि पेशेंट का स्टेज वन था और उनको तो ठीक रहना चाहिए था। हमें उस समय पता नहीं था लेकिन उनका p53 था, जिसकी वजह से उनको उसी समय कीमोथेरेपी मिलनी चाहिए थी। साथ ही रेडियोथैरेपी भी मिलनी चाहिए थी। उचित उपचार के बाद अभी वह ठीक हो जाएगी।

इस कैंसर से बचने के लिए क्या–क्या सावधानियां बरती जा सकती हैं?

महिलाओं को उचित समय पर गर्भ धारण कर लेना चाहिए। इसके साथ ही सिगरेट पीना, शराब पीना, ज्यादा फ्रोजन वाले मीट खाना सही नहीं माना जाता है। आजकल हम देखें तो लोग काम के पीछे भाग रहे हैं। सेहत का ध्यान कोई नहीं रख पाता। लेकिन अच्छा स्वस्थ जीवन के लिए बेहद जरूरी है। अपनी लाइफ स्टाइल को थोड़ा सा ठीक रखें। किसी भी मनुष्य के लिए कम से कम छह घंटे की नींद जरूरी होती है। लेकिन हमारी छह घंटे की भी नींद ठीक से पूरी नहीं हो पाती है। आज के समय में अगर आपको रात के तीन बजे भी कोई काम याद आता है तो आप उसे करने लगते हैं। इससे सेहत पर बहुत नकारात्मक असर पड़ता है। इसलिए हमें यह सोचना चाहिए कि कोई भी चीज इतनी जरूरी नहीं हो सकती है कि उसकी वजह से हमारी सेहत खराब हो जाए। हम क्यों कमाते हैं? हम इसलिए कमाते हैं कि अच्छी जिंदगी गुजार सकें। लेकिन ज्यादा से ज्यादा कमाने के चक्कर में हम हद से ज्यादा काम करने लगते हैं और न चाहते हुए भी अनगिनत बीमारियां अपना लेते हैं। यह समझदारी की बात नहीं है। हमें हमेशा कोशिश करनी चाहिए कि जितना हो सके वर्किंग ऑवर्स में ही अपना सारा काम खत्म कर लें। ताकि नॉन वर्किंग ऑवर्स में हम अपने लिए समय निकाल सकें। इसके साथ ही लाइफस्टाइल को बेहतर बनाने के लिए रोज कुछ घंटे व्यायाम करना चाहिए। इसके अलावा हमें रोज नियमित रूप से नींद लेनी चाहिए। ज्यादा तनाव लेना भी सेहत के लिए हानिकारक साबित होता है। इन सभी गतिविधियों से हार्मोन्स असंतुलित होने का खतरा बढ़ जाता है। इसलिए हेल्दी खाना लेना चाहिए। नींद का ध्यान रखना चाहिए और योग करना चाहिए जिससे हम सभी को सकारात्मक ऊर्जा मिले। सेहत पर ज्यादा से ज्यादा ध्यान देना चाहिए। सबसे जरूरी यह है कि स्वास्थ्य के साथ बिल्कुल भी लापरवाही न करें।

आप रेडियो तरंग 90.0 एफएम के श्रोताओं को क्या संदेश देना चाहेंगी?

समय–समय पर बॉडी स्क्रीनिंग करवाना सबसे जरूरी है। अपनी शरीर की गतिविधियां और स्वस्थता की उचित जांच के लिए हमें 20 से 30 वर्ष के बीच में हर साल स्क्रीनिंग करवानी चाहिए। इससे हमें यह पता चलता है कि हमारे शरीर की क्या हालत है। हमें किसी बीमारी ने जकड़ तो नहीं रखा या शरीर में कोई परेशानी तो नहीं पनप रही। इसके साथ ही 30 से 70 वर्ष के आगे तक भी हर तीसरे साल जांच करवाना चाहिए। देखा जाए तो ज्यादातर एब्नार्मल सेल्स जल्दी पकड़े जाते हैं, जिसकी वजह से स्टेज एक से भी पहले स्टेट जीरो पर भी हम कैंसर को पकड़ पाते हैं। इसके अलावा हेल्थ के लिए थोड़ा प्रीमियम निकाल कर रखना चाहिए। संतुलित व ताजा आहार खाएं और भोजन ऐसा लें, जिसमें आपके शरीर को सही मात्रा में प्रोटीन, फाइबर, कैल्शियम, कार्ब्स, फैट और विटामिन मिल पाएं। सबसे जरूरी यह बात कि हर काम से पहले अपनी सेहत का ध्यान रखें।

महिला आरक्षण बिल

आयुष

नई दिल्ली। जिस प्रकार हम वस्त्र बदलते हैं उसी प्रकार बिल भी परिवर्तित होता रहता है। यह बात फूले–पेरियार–अंबेडकर स्टडी सर्किल के आयोजन में प्रो. अनु मेहरा ने कही। सेमिनार का विषय वूमेन रिजर्वेशन बिल ए गेमचेंजर जेंडर इक्वलिटी था। मुख्य वक्ता दिल्ली विवि की प्रो. अनु मेहरा थीं। वक्तव्य की शुरुआत में स्टडी सर्किल के संयोजक प्रो. राजीव कुमार और सह संयोजिका डॉक्टर शालिनी स्वामी ने अनु अरोड़ा का अभिनंदन किया।

प्रो. मेहरा ने अपने वक्तव्य में महिला आरक्षण बिल की संक्षिप्त पृष्ठभूमि को बताया और क्यों पूर्व सरकार इस बिल को पारित कराने में असफल रही। प्रो. अनु का उद्देश्य महिला सशक्तिकरण व लैंगिक समानता का समर्थन करना है। समिति अध्यक्ष नंदिनी राज ने धन्यवाद करते हुए कार्यक्रम का समापन किया।

हर खबर को पत्रकार की नजर से देखें

हर्षित गोयल

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट या हाईकोर्ट में रिपोर्टिंग कैसे की जाती है, किन बातों का विशेष ध्यान रखा जाता है और मीडिया में कानून और अदालत की रिपोर्टिंग का क्या महत्व होता है? ऐसे विषयों पर राम लाल आनंद महाविद्यालय के हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग ने 31 अक्टूबर को सेमिनार कक्ष में व्यावहारिक प्रशिक्षण आयोजित करवाया, जिसका विषय मीडिया कानून और अदालत की रिपोर्टिंग था।

मुख्य वक्ता के तौर पर प्रभाकर मिश्र ने विद्यार्थियों को कोर्ट की रिपोर्टिंग के बारे में बताया कि किस तरह सुप्रीम कोर्ट या हाईकोर्ट में रिपोर्टिंग की जाती है और मीडिया में ऐसे मुद्दों का क्या महत्व होता है। डॉ. सीमा भारती के निर्देशन में हुए कार्यक्रम में प्रभाकर मिश्र ने विद्यार्थियों को चुनावी बॉन्ड, आईपीसी, सीआरपीसी, मानहानि, जूनियर जज से सीनियर जज बनने तक की प्रक्रिया और पीआईएल के बारे में जानकारी दी। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि आप आम जनता नहीं है। आपको खबरें पत्रकार की नजर से देखना होगा। समारोह में शिक्षक डॉ. प्रदीप कुमार सहित विभाग के विद्यार्थी मौजूद थे।

विद्यार्थियों ने जाना मीडिया कानून और अदालत की रिपोर्टिंग का तौर तरीका।

खादी महोत्सव

राम कुमार पाण्डेय

नई दिल्ली। एक समय पर देश की पहचान रही खादी के प्रचार प्रसार के लिए चलाए जा रहे खादी महोत्सव के अंतर्गत राम लाल आनंद महाविद्यालय में गांधी स्टडी सर्कल ने 23 नवंबर को खादी स्वाभिमान और आत्मनिर्भरता का प्रतीक विषय पर निबंध लेखन प्रतियोगिता आयोजित की। प्रतियोगिता में महाविद्यालय के लगभग 13 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतिभागियों को लेखन के लिए एक घंटे का समय दिया गया। प्रतिभागियों को भाषा व शब्द सीमा की बाध्यता में नहीं बांधा गया। प्रतियोगिता का उद्देश्य लोगों में खादी के प्रति जागरूकता और लगाव पैदा करना था। प्रतियोगिता के दौरान निरीक्षक के रूप में गांधी स्टडी सर्कल के पदाधिकरी व शिक्षक सदस्य सुश्री नीरा पाल उपस्थित रहीं। गांधी स्टडी सर्कल के उपाध्यक्ष ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

भावी लेखक बनाता है बाल साहित्य

साहित्य अकादमी में उपस्थित बाल साहित्यकार

हर्षित

- बाल साहित्यकारों को अकादमी ने पुरस्कृत किया
- सभ्यता का मुख्य आधार रहा है बाल साहित्य

नई दिल्ली। बाल साहित्य भविष्य के रचनाकार तैयार करता है। आने वाला दशक बाल साहित्यकारों का है। यह बात साहित्य अकादमी के अध्यक्ष माधव कौशिक ने अपने वक्तव्य में कही। साहित्य अकादमी ने 9 नवंबर को त्रिवेणी सभागार में बाल साहित्य पुरस्कार 2023 का आयोजन किया। प्रारंभ में साहित्य अकादमी के अध्यक्ष माधव कौशिक ने मुख्य अतिथि व प्रख्यात अंग्रेजी लेखक हरीश त्रिवेदी का स्वागत किया। अकादमी सचिव के. निवास राव ने बताया कि बाल साहित्य हमारी सभ्यता का मुख्य आधार रहा और हर समाज को इसकी जरूरत है। मुख्य अतिथि हरीश त्रिवेदी ने कहा कि पहले हमारे बड़े बुजुर्ग कहानी सुनाया करते थे। इससे वाचक और श्रोता दोनों के बीच एक संवाद बनता था, जिसमें बहुत से परिवर्तन बच्चों के अनुसार होते रहते थे। वह अब एकल परिवार के कारण खत्म हो गया है। बच्चों के तीनों गुण निर्दोषता, जिज्ञासा व कल्पनाशीलता हमें बचाकर रखने होंगे। उन्होंने बच्चों को समझने के लिए बड़ों को भी बाल साहित्य पढ़ने की जरूरत पर जोर दिया। माधव कौशिक ने बाल साहित्य पुरस्कार देते हुए साहित्यकारों का मनोबल बढ़ाया और उनकी प्रसंशा की। समारोह में कई बाल साहित्यकारों को पुरस्कृत किया गया।

समापन वक्तव्य देते हुए अकादमी उपाध्यक्ष प्रो. कुमुद शर्मा ने बताया कि भारत की भाषायी विविधता ने विविध रंग और कलेवर के साहित्य को भी अनूठे तरीके से संभव किया है। निर्दोष मासूमियत की रक्षा करने का जो उत्तरदायित्व बाल साहित्यकारों ने उठाया है उसके लिए भी सभी बाल साहित्यकार प्रशंसा के पात्र हैं।

आर्यन मिस्टर फ्रेशर आस्था मिस फ्रेशर

हर्षित गोयल

नई दिल्ली। हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के लिए 12 अक्टूबर को स्वागत समारोह का आयोजन किया। विद्यार्थियों की प्रतिभा, रुचि व लगन देखने के लिए सीनियर ने उन्हें विभिन्न टास्क दिए। कार्यक्रम में विभाग के शिक्षक डॉ. अटल तिवारी, डॉ. सीमा भारती, डॉ. प्रदीप कुमार मौजूद रहे।

प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों ने एक के बाद एक रोचक प्रस्तुतियां दीं। किसी ने देवदास के किरदार को निभाया तो कोई गब्बर के रोल में फिट नजर आया। छात्राओं के किरदार भी एक से बढ़कर एक थे। अंत में विभाग संयोजक प्रो. राकेश कुमार ने मिस्टर फ्रेशर आर्यन और मिस फ्रेशर आस्था के नामों की घोषणा की। सभी ने तालियों से उनका स्वागत किया। समारोह आयोजित करने में पत्रका. रिता परिषद सहित द्वितीय और तृतीय वर्ष के विद्यार्थी सक्रिय रहे।

कला का कोई जेंडर नहीं

आदित्य कनोजिया

- विभिन्न भाषाओं के लेखक व कार्यकर्ता हुए शामिल
- सृजनात्मकता का कोई जेंडर नहीं : माधव कौशिक

नई दिल्ली। रचना को केवल रचना की दृष्टि से देखना चाहिए। हर किसी की पीड़ा एक समान होती है। उसको महसूस करना सभी का कर्तव्य है। यह बात परिसंवाद के उद्घाटन के दौरान साहित्य अकादमी के अध्यक्ष माधव कौशिक ने कही। साहित्य अकादेमी की ओर से 9 नवंबर को हुए परिसंवाद का विषय 'ट्रांसजेंडर लेखन की रचनात्मक अभिव्यक्ति और सौंदर्यशास्त्र' था।

साहित्य अकादेमी के सचिव के श्रीनिवास राव ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि पिछले कुछ समय में ट्रांसजेंडर लेखन को मुख्य धारा में थोड़ी पहचान मिलना आरंभ हुआ है। साहित्य अकादमी की अंग्रेजी पत्रिका इंडियन लिटरेचर की अतिथि संपादक सुकृता पॉल कुमार ने कहा कि ट्रांसजेंडर लेखन को मुख्य धारा में शामिल करने के लिए हमें ऐसे टूल खोजने होंगे जिनसे उनको व्यापक रूप से समझा और सहेजा जा सके।

सुकृता पॉल ने इस कार्य को आगे बढ़ाने के लिए सभी का सहयोग मांगा और इंडियन लिटरेचर का एक अंक ट्रांसजेंडर लेखन पर केंद्रित करने की बात कही।

परिसंवाद में पूरे देश से विभिन्न भारतीय भाषाओं के ट्रांसजेंडर लेखक, कार्यकर्ता और विद्वानों ने हिस्सा लिया। उसमें मुख्य रूप से ए. रेवती, अजान सिंह, कल्कि सुब्रह्मण्यम, देविका देवेंद्र एस. मंगलामुखी, कुहू चन्ना, मानवी बंद्योपाध्याय तथा संजना साइमन ने आलेख प्रस्तुत किए। भैरवी अमरानी, दिशा शेख, सांता खुराई, शिवांश ठाकुर, सुमन महाकुड, विजयराज मल्लिका ने अपनी रचनाएं प्रस्तुत कीं। इस आयोजन में बड़ी संख्या में श्रोताओं ने शिरकत की।

संवाद करते हुए शब्द गढ़ते हैं बच्चे

विकास यादव

नई दिल्ली। बच्चों को सुनने के लिए धैर्य की जरूरत होती है, जिसकी आजकल हमारे पास बहुत कमी है। बच्चे जब किसी के साथ संवाद करते हैं तो वह उससे अपनी शब्दावली को बना रहे होते हैं। यह बातें राजकमल प्रकाशन समूह की मासिक विचार–बैठकी की तीसरी कड़ी में भाषा में बच्चों की जगह विषय पर परिचर्चा के दौरान वक्ताओं ने कही।

इंडिया हैबिटैट सेंटर के गुलमोहर हॉल में हुई परिचर्चा में राजकमल के संपादकीय निदेशक सत्यानंद निरुपम ने कहा कि आम तौर पर जो चर्चाएं होती हैं वह अक्सर राजनीति से शुरू होती हैं और राजनीति पर ही खत्म हो जाती हैं। सुदीप्ति ने कहा–बच्चों को सुनने के लिए धैर्य की जरूरत होती है। मनीषा चौधरी ने कहा कि भाषा बच्चों के अस्तित्व से जुड़ी हुई है। जोजफ मथाई ने कहा कि हमें भाषा के साथ नए प्रयोग करने के लिए बच्चों का हौसला बढ़ाना चाहिए। सत्यानंद निरुपम ने सभी लोगों का धन्यवाद किया और कार्यक्रम का समापन किया।

कविताओं में याद किए गए कवि वीरेन डंगवाल

पवन कुमार

नई दिल्ली। साहित्य अकादमी से पुरस्कृत हिन्दी के मशहूर कवि वीरेन डंगवाल की याद में हर साल वीरेनियत समारोह का आयोजन किया जाता है। इस साल भी 14 अक्टूबर को इंडिया हैबिटेट सेंटर के गुलमोहर हॉल में वीरेनियत 5 का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत कवि वीरेन डंगवाल पर बनाई गई डॉक्यूमेंट्री 'मैंने चुना एक अलग रास्ता' से की गई। यह फिल्म वीरेन डंगवाल के साहित्य और उनकी कविताओं पर केंद्रित है। जनसंस्कृति मंच के इस कार्यक्रम में हिंदी के कई जाने–माने कवि शामिल हुए।

कुमार अंबुज, अजंता देव, विनय सौरभ, नेहा नरूका, उस्मान खान, विहाग वैभव और रूपम मिश्र ने अपनी कविताओं का पाठ किया। इन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से श्रोताओं को बताने की कोशिश की कि किस तरह दलित, आदिवासी, गरीब और महिलाओं को दबाया जाता है। उन्हें अधिकारों से वंचित रखा जाता है। उनके साथ सदियों से मानवीय व्यवहार किया जाता रहा है और अंत में मानव इतिहास को बदलकर उन्हें एक राक्षस की भांति पेश कर दिया जाता है, जो इतिहास आज भी मौजूद है वह कहीं न कहीं दलित और गरीब मजदूरों की लाशों पर ही बनाया गया है।

कई कवियों ने अपनी कविता के जरिए कोरोना काल की भयावह तस्वीर जाहिर की। किस तरह कोरोना के समय मानव ने ही मानव का फायदा उठाया। आखिर किस तरह राजनेताओं ने कोरोना के दौर में अपनी सच्चाई दिखाई। गरीब मजदूरों को असंख्य यातनाएं झेलनी पड़ीं। रहने–खाने की कमी के कारण उन्हें शहर से लौटकर अपने गांव वापस जाना पड़ा। कई कविताओं के माध्यम से बताया गया कि आज के समय में गरीब रिश्तेदारों से ही मानवता कुछ हद तक बची हुई है। मानव जीवन से जुड़े कई संवेदनशील मुद्दों पर चर्चा की गई। इस अवसर पर वीरेन डंगवाल की कविताएं भी पढ़ी गईं। वीरेनियत 5 के अंतर्गत हुए कविता पाठ ने श्रोताओं का ध्यान कविताओं में छिपे भाव की ओर खींचा।

विद्यार्थियों ने जाना स्वच्छता का महत्व

अंशिका

नई दिल्ली। स्वच्छता अभियान को सफल बनाने के लिए दिल्ली विश्वविद्यालय के राम लाल आनंद महाविद्यालय में सफाई अभियान चलाया गया। बीएमएस विभाग की डॉ. सृजना सिंह, डॉ. दीप्ति गुप्ता और डॉ. अनुषा के नेतृत्व में विद्यार्थियों ने कालेज परिसर में सफाई की। अभियान शुरू करने से पहले विद्यार्थियों को स्वच्छ भारत अभियान की थीम और स्वच्छता का महत्व समझाया गया। इसके बाद अभियान में शामिल सभी सदस्यों को दस्ताने, मास्क और डिस्पोजल बैग बांटे गए।

अभियान के अंतर्गत सभी ने स्वच्छता के उद्देश्य से महाविद्यालय परिसर में गिरा कूड़ा–कचरा उठाया। अन्य विद्यार्थियों से महाविद्यालय को साफ रखने की अपील भी की। विभाग के प्रथम, द्वितीय और तृतीय वर्ष से विद्यार्थियों ने अभियान में भाग लिया और महाविद्यालय परिसर में स्वच्छता अभियान को सफल बनाया। महाविद्यालय में यह अभियान विद्यार्थियों के लिए प्रेरणादायक रहा।

'अंग्रेजों ने हमें भाषा के आधार पर बांट दिया'

पवन कुमार

नई दिल्ली। मशहूर लेखक और संपादक राजेंद्र यादव की पुण्यतिथि पर 'हंस' पत्रिका का हंस साहित्योत्सव 2023 आयोजित किया गया। 27, 28 और 29 अक्टूबर को इंडिया हैबिटेट सेंटर के एम्फीथिएटर में संपन्न हुए समारोह में हिंदी साहित्य, मीडिया और सिनेमा जैसे प्रमुख विषयों पर अनेक सत्र रखे गए। इन सत्रों में देश भर के प्रमुख लेखक, जाने–माने आलोचक, मशहूर रंगमंच कलाकार, प्रख्यात निर्देशक, सिनेमा से जुड़े महत्वपूर्ण लोगों और सामाजिक कार्यकर्ताओं को आमंत्रित किया गया। उत्सव के उद्घाटनकर्ता मराठी भाषा के प्रमुख साहित्यकार शरण कुमार लिंबाले रहे।

कई लेखकों व कवियों ने कहा कि हमारी सबसे बड़ी गलती यह है कि हमने नवयुवकों को अपनी सांस्कृतिक विरासत से लगभग अपरिचित रखा। एक सत्र में दलित लेखिका अनीता भारती ने कहा कि दलित साहित्य आक्रामक साहित्य नहीं है। एक

हंस साहित्योत्सव में अलग–अलग सत्रों में लेखकों ने रखे विचार।

तरह से वह प्रतिरोध का साहित्य है। उपन्यासकार अब्दुल बिस्मिल्लाह कहते हैं कि अंग्रेजों ने हमें भाषा के आधार पर बांट दिया। उन्होंने यह तय कर दिया कि हिंदी हिंदुओं की है और उर्दू मुसलमानों की भाषा है और हम सबने यह मान भी लिया। इसी क्रम में रितु बाला कहती हैं कि हमें साहित्य और शिक्षा को मिलाकर एक करना होगा। शिक्षा और साहित्य अलग नहीं होने चाहिए। शिक्षा हमें स्थिति दिखाती है और साहित्य हमें संवेदनशील बनाता है। राजेश कहते हैं कि कॉरपोरेट जगत सिर्फ मुनाफा चाहता है। साथ ही वह मशीन के जरिए मनुष्य पर कब्जा करना चाहता है। आर्टीफीशियल इंटेलीजेंस के पीछे भी कहीं न कहीं मनुष्य ही काम कर रहा है, जो मनुष्य पर विजय प्राप्त करना चाहता है। नवीन जी ने कहा कि मीडिया का नया दौर आ गया है। अब मीडिया और साहित्य को एक फलक पर आ जाना चाहिए। मुख्य धारा का मीडिया आपराधिक मीडिया में बदलता जा रहा है, क्योंकि मीडिया से धीरे–धीरे मानवीयता और लोकतंत्र गायब होते जा रहे हैं। साहित्योत्सव में कवि व पत्रकार आलोक श्रीवास्तव ने कुछ कविताएं सुनाईं। राजीव निगम ने व्यंग्यात्मक प्रस्तुति दी। अजय कुमार ने विजयदान देथा की कहानी 'रिजक की मर्यादा' पर आधारित नाटक बड़ा भांड तो बड़ा भांड का मंचन किया। इन सत्रों में लेखक शिवमूर्ति, अखिलेश, योगेन्द्र आहूजा, किरण सिंह, वीरेन्द्र यादव, पल्लव सहित बड़ी संख्या में लोगों ने सहभागिता की।

आरएलए के अक्षित कटोच ने वियतनाम में रखे विचार

खुशी वशिष्ठ

नई दिल्ली। राष्ट्रीय कैडेट कोर प्रति वर्ष वैश्विक स्तर पर युवा विनिमय कार्यक्रम का आयोजन करती है। इस वर्ष दिल्ली विवि के राम लाल आनंद महाविद्यालय की एनसीसी इकाई से एसयूओ अक्षित कटोच को वियतनाम में आयोजित यूथ एक्सचेंज कार्यक्रम में भाग लेने का अवसर मिला। कार्यक्रम 21 अगस्त से 30 अगस्त 2023 तक चला।

कार्यक्रम में कई ऐतिहासिक स्थलों का दौरा भी शामिल था। इसमें मंदिर, हो ची मिन्ह समाधि, ऐतिहासिक कू ची सुरंगों और कई अन्य स्थानों का दौरा शामिल था। अक्षित कटोच बताते हैं कि यह कार्यक्रम सांस्कृतिक विनिमय, ऐतिहासिक दृष्टिकोण, विचारों को साझा करने और यादगार मुलाकातों से भरपूर था।

दृश्य की गहराई को समझें

चित्रहार फेस्ट में विद्यार्थियों ने दिखाई रुचि, साथियों की कला को निहारा उत्कर्ष

नई दिल्ली। फोटोग्राफी दृश्य को मनुष्य के साथ जोड़ने का प्रयास करती है। इसी प्रयास को बढ़ावा देते हुए विद्यार्थियों में कौशल को बढ़ावा देने और दृश्यों को गहराई से समझने की कला को विकसित करने के लिए राम लाल आनंद महाविद्यालय के फिल्म और फोटोग्राफी क्लब दृश्यम ने अपना वार्षिक कार्यक्रम चित्रहार आयोजित किया।

कार्यक्रम में फोटो प्रदर्शनी, फिल्म निर्माण और फोटोग्राफी प्रतियोगिता रखी गई थी। प्रतियोगिताओं के माध्यम से विद्यार्थियों की प्रतिभा को उजागर किया गया। इस दौरान उनकी ओर से दिखाए गए हुनर को शिक्षकों और साथी विद्यार्थियों की ओर से सराहा गया।

दिल्ली विश्वविद्यालय के 20 से अधिक महाविद्यालय के लगभग 250 विद्यार्थियों ने चित्रहार फेस्ट की प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया। हिस्सा लेते हुए उन्होंने अपनी कला को दिखाने का प्रयास किया।

आज देश को फिर से बापू की जरूरत

योगेश प्रताप

नई दिल्ली। नारी चेतना यानी नारी का अपने अस्तित्व व अपनी सत्ता के लिए सचेत होना। सचेत होने की भावना ही नारी चेतना है। इसी विषय पर साहित्य अकादेमी ने 20 नवंबर को साहित्य अकादमी के सभा कक्ष में नारी चेतना कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें उर्दू की 5 शायरा शबाना नजीर, इफ्फत जर्री, अना दे. हलवी, रेशमा जैदी और आबगीना आरिफ को आमंत्रित किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत आबगीना आरिफ की नज्मों से हुई। इन नज्मों में जहां उनके जीवन के कटु अनुभव दर्ज थे, जिसमें समाज के नजरिए को भी बेबाकी से प्रस्तुत किया गया। रेशमा जैदी ने अपनी कुछ नज्में और गजलें प्रस्तुत कीं। वहीं अना देहलवी ने उनके कुछ शेर में उल्लेख करते हुए कहा फिर से आज भारत को बापू की जरूरत है। अंत में शायरा शबाना नजीर ने अपनी कई नज्में और गजलें सुनाईं। कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादेमी के हिंदी संपादक अनुपम तिवारी ने ही खूबसूरती से किया।

खुमन प्रकाश सिंह वृत्तचित्र को राज्य फिल्म पुरस्कार

खुशी चौहान

नई दिल्ली। अरिबम स्याम सरमा के निर्देशन में बनी और केन्द्रीय साहित्य अकादमी से निर्मित डॉक्युमेंट्री खुमन प्रकाश सिंह को वर्ष 2023 के लिए सर्वश्रेष्ठ जीवनी और सांस्कृतिक फिल्म श्रेणी के तहत 15वें मणिपुर राज्य फिल्म पुरस्कार से नवाजा गया है। यह डॉक्युमेंट्री साहित्य अकादेमी की भारतीय साहित्य अभिलेखागार परियोजना के अंतर्गत निर्मित 164वीं डॉक्युमेंट्री है।

1997 में शुरू की गई भारतीय साहित्य अभिलेखागार परियोजना का उद्देश्य महत्त्वपूर्ण लेखकों और साहित्य से जुड़ी बहुमूल्य सामग्रियों को एकत्र और संरक्षित करना है। साहित्य अकादमी सभी मान्यता प्राप्त भाषाओं के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देने वाले प्रतिष्ठित भारतीय लेखकों और विद्वानों पर डॉक्युमेंट्री का निर्माण भी कर रही है। साहित्य अकादेमी ने अब तक अमृता प्रीतम, विंदा करंदीकर, गोपालकृष्ण अडिगा, डी जयकांतन, धर्मवीर

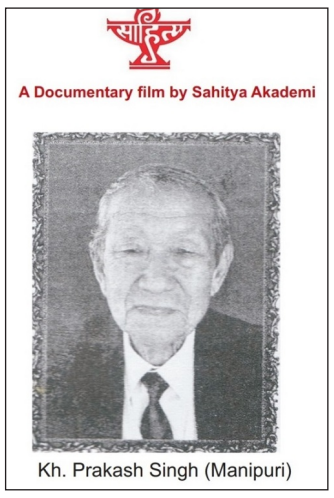

Kh. Prakash Singh (Manipuri)

भारती, विजय दान देथा, मुल्क राज आनंद, कुर्रतुल ऐन हैदर, वैकम मुहम्मद बशीर, रहमान राही, महाश्वेता देवी, एमके बिनोदिनी, अशोक मित्रा, निर्मल वर्मा, मनोहर राय सरदेसाई, रस्किन बॉन्ड, सी नारायण रेड्डी और मनोज दास सहित कई अनेक प्रख्यात भारतीय लेखकों पर डॉक्युमेंट्री बनाई है। इसके साथ ही अकादमी की आगे के दिनों में भी कई लेखकों पर डाक्यूमेंट्री बनाने की योजना है।

इक्वल सेल ने नए साथियों को चुना

सोनिका

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय की इक्वल अपॉर्चुनिटी सेल नें नए सदस्यों की चयन प्रक्रिया शुरू की। इक्वल अपॉर्चुनिटी सेल महाविद्यालय में सभी विद्यार्थियों के लिए समान अवसर प्रदान करने के क्षेत्र में निरंतर कार्य करती है।

समिति ने कंटेंट राइटर, मंच संचालन, ग्राफिक डिजाइनर, सोशल मीडिया हैंडलर और पब्लिक रिलेशन आदि पदों की नियुक्ति के लिए 22 नवंबर 2023 तक नामांकित करने के लिए कहा। समिति ने 28 विद्यार्थियों के नामांकन स्वीकार किए। जिनमें से 23 विद्यार्थी ऑडिशन प्रक्रिया में जुड़े और अपनी–अपनी रुचि के अनुसार निर्णायक मंडल के समक्ष प्रस्तुति दी। चयनित विद्यार्थियों के नाम समिति जल्द साझा करेगी।

इक्वल समिति के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, संयुक्त सचिव सहित अन्य तीन कार्यकारिणी सदस्यों की नियुक्ति पहले ही की जा चुकी है। इसमें राजनीतिक विज्ञान विशेष से सचिन यादव को अध्यक्ष और बीए प्रोग्राम राजनीतिक विज्ञान, इतिहास से मनीष कुमार को उपाध्यक्ष का कार्यभार सौंपा गया। नई जिम्मेदारी मिलने के साथ ही पदाधिकारी अपना–अपना काम करने लगे हैं।

'चीफ की दावत' से बन गई 'दावत'

निशा मिश्रा

नई दिल्ली। भीष्म साहनी की कहानी चीफ की दावत से प्रेरित 'दावत' लघु फिल्म का प्रदर्शन 18 अक्टूबर को महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के गालिब सभागार में किया गया। प्रदर्शनी से पहले विवि के कुलपति ने कहा कि 'दावत' की प्रस्तुति दर्शकों को भावुक कर देने वाली है। 'दावत' आज के समय में बदलते पारिवारिक परिवेश और मूल्यों का एक बेहद खूबसूरत प्रतिबिंब है। फिल्म प्रस्तुति जश्न प्रोडक्शन ग्रुप ने की। निर्देशक नीरज छिलवार और अजहर अहमद रहे। इस अवसर पर सभागार में प्रो. कृष्ण कुमार सिंह, प्रो. अखिलेश दुबे, डॉ. रामानुज अस्थाना, डॉ. उमेश कुमार सिंह, डॉ. अशोक नाथ त्रिपाठी के साथ बड़ी संख्या में विद्यार्थी मौजूद रहे।

जरूरतमंदों के लिए की गई सहायता की पहल

श्वेता सिंह और खुशी शाक्या

नई दिल्ली। दान करना एक निस्वार्थ कार्य है। ऐसा ही निस्वार्थ कार्य करने की भावना से राम लाल आनंद महाविद्यालय के एनएसएस और नॉर्थ ईस्ट स्टूडेंट वेलफेयर समिति ने डोनेशन ड्राइव का आयोजन किया। यह आयोजन महाविद्यालय परिसर में हुआ, जिसके अंतर्गत महाविद्यालय के सभी छात्र–छात्राएं अपनी इच्छा के अनुसार कोई भी चीज दान कर सकते थे। एनएसएस का आयोजन तीन दिन 6 नवंबर से 8 नवंबर तक चला। तीन दिन में शुरुआती दो दिन दान करने के लिए रखा गया। इसमें विद्यार्थियों ने अपनी इच्छा के अनुसार कपड़े, सैनिटरी नैपकिंस व अन्य चीजें डोनेट की। वहीं आयोजन के तीसरे दिन एकत्रित सामान को दिल्ली की जे.जे. कॉलोनी में वितरित

नार्थ ईस्ट सोसाइटी के बच्चों ने उत्साह के साथ जुटाई सामग्री।

किया गया। इस आयोजन में 60 से भी अधिक छात्रों ने भाग लिया। यह पूरा कार्यक्रम एनएसएस के प्रोग्राम ऑफिसर डॉ अनुराग शर्मा के सहयोग से संपन्न हुआ। साथ ही महाविद्यालय में एनएसएस के अध्यक्ष हर्षदेव सिंह ने भी सफल बनाने मे महती भूमिका निभाई।

वहीं नॉर्थ ईस्ट स्टूडेंट वेलफेयर समिति के डोनेशन अभियान का उद्देश्य मणिपुर और सिक्किम के पीड़ितों की सहायता के लिए सामान जुटाना था। मणिपुर में मैतई और कुकी समुदाय के बीच हिंसक झड़प हुई थी। कई लोग घायल हुए थे। वहीं सिक्किम में भारी बाढ़ आने के कारण हुए नुकसान को देखते हुए पीड़ितों की सहायता की एक पहल की गई। 7–8 नवंबर को डोनेशन ड्राइव चलाया गया, जिसमें 100 से अधिक विद्यार्थियों ने डोनेशन के रूप में कंबल, कपड़े, सेनेटरी नैपकिन, प्राथमिक चिकित्सा सहित काफी सामान दिया। दो दिन के ड्राइव में समिति के सदस्यों ने विद्यार्थियों से अपील की कि वह पीड़ितों की सहायता करने में डोनेशन देकर मदद करें। इस ड्राइव में एकत्रित किया गया यह सामान समिति की ओर से निर्धारित नियमों के अनुसार जल्द ही वहां पहुंचाने का प्रयास किया जा रहा है। इस आयोजन में बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने सहभागिता की।

संरक्षक मंडल
प्राचार्य
प्रो. राकेश कुमार गुप्ता
विभागाध्यक्ष
प्रो. राकेश कुमार
परामर्शदाता
डॉ. अटल तिवारी
संपादक
मीनाक्षी पंत
संपादकीय सहयोग
कंचन गुप्ता